अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) योग की प्रवृत्ति से उत्पन्न आत्मा के शुभाशुभ परिणाम कहलाते हैं-
(क) लेश्या (ख) कषाय
(ग) वेद (घ) संज्ञा (क)

(ii) देवगति में दण्डक होते हैं-
(क) 7 (ख) 9
(ग) 13 (घ) 10 (ग)

(iii) बंधे हुए ज्ञानावरणीय कर्मों के तीव्र अशुभ रस को मंद करना कहलाता है-
(क) रसघात (ख) गुणश्रेणि
(ग) स्थिति घात (घ) गुण संक्रमण (क)

(iv) नौवें गुणस्थान में क्रियाएँ पायी जाती है-
(क) 22 (ख) 15
(ग) 14 (घ) 23 (ख)

(v) आठ परीषह किस कर्म के उदय से होते हैं-
(क) वेदनीय कर्म के (ख) ज्ञानावरणीय कर्म के
(ग) अन्तराय कर्म के (घ) मोहनीय कर्म के (घ)

(vi) भय मोहनीय का उदय किस गुणस्थान तक होता है-
(क) पाँचवें गुणस्थान तक (ख) सातवें गुणस्थान तक
(ग) आठवें गुणस्थान तक (घ) नौवें गुणस्थान तक (ग)

(vii) आठ द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा चलता है-
(क) पन्नवणा सूत्र में (ख) जीवाभिगम सूत्र में
(ग) भगवती सूत्र में (घ) अनुयोगद्वार सूत्र में (क)

(viii) चतुरिन्द्रिय में द्रव्येन्द्रियाँ पायी जाती हैं-
(क) 2 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 8 (ग)

(ix) आत्मा में शक्ति रूप से जो वीर्य रहता है, उसे कहते हैं-
(क) करण वीर्य (ख) लब्धि वीर्य
(ग) अकरण वीर्य (घ) चारों ही (ख)

(x) उपयोग आत्मा में कौन-कौनसी आत्मा की नियमा होती है-
(क) द्रव्य, ज्ञान (ख) द्रव्य, दर्शन
(ग) द्रव्य, वीर्य (घ) द्रव्य, चारित्र (ख)

(xi) द्रव्य आत्मा में भजना नहीं है-
(क) कषाय आत्मा की (ख) योग आत्मा की
(ग) ज्ञान आत्मा की (घ) उपयोग आत्मा की (घ)

(xii) ज्ञान आत्मा में गुणस्थान होते हैं-
(क) 1 - 4 (ख) 2, 4 - 14
(ग) 2 - 14 (घ) 3 - 14 (ख)

(xiii) आचार्य उपाध्याय आदि के अवर्णवाद बोलने वाले साधु-मरकर उत्कृष्ट कहाँ उत्पन्न होते हैं-
(क) आठवें देवलोक में (ख) पाँचवें दवेलोक में
(ग) छठे देवलोक में (घ) पहले देवलोक में (ग)

(xiv) उत्कृष्ट बारहवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं-
(क) आभियोगिक साधु (ख) स्वलिंगी दर्शन भ्रष्ट साधु
(ग) परिव्राजक (घ) कान्दर्पिक साधु (क)

(xv) प्रज्ञापना के किस पद में असंयत भव्य देव का वर्णन मिलता है-
(क) 21वें में (ख) 20 वें में
(ग) 15 वें में (घ) 9 वें में (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) नवलौकान्तिक देवों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति 8 सागरोपम की बतलायी गई है। (हाँ)

(ii) वायुकाय में 5 योग पाये जाते हैं। (हाँ)

(iii) जिन्होंने निगोद को छोड़कर दूसरी जगह एक बार भी जन्म ग्रहण नहीं किया, वे सभी व्यवहार राशि के जीव हैं। (नहीं)

(iv) 'जिस भव में उपशम श्रेणि होती है, उस भव में क्षपक श्रेणि नहीं करता', यह मान्यता भगवती सूत्र के अनुसार है। (हाँ)

(v) वेदनीय कर्म के उदय से आठ परीषह होते हैं। (नहीं)

(vi) तीसरे गुणस्थान में 43 हेतु पाये जाते हैं। (हाँ)

(vii) त्रीन्द्रिय के छह द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं। (नहीं)

(viii) सर्वार्थसिद्ध के एक-एक देवता संज्ञी मनुष्य के रूप में द्रव्येन्द्रियाँ भविष्य में नियमपूर्वक आठ नहीं करेंगे। (नहीं)

(ix) करणवीर्य के कारण जो उत्थान बल पुरुषकार पराक्रम होता है,उसे करणवीर्य कहते हैं। (नहीं)

(x) ज्ञान आत्मा में वीर्य आत्मा की भजना है। (हाँ)

(xi) 1 से 10 गुणस्थान में कषाय आत्मा नहीं होती है। (नहीं)

(xii) उपयोग आत्मा सिद्ध और संसारी सभी जीवों के होती है। (हाँ)

(xiii) विराधक साधुजी मरकर जघन्य पहले देवलोक में उत्पन्न होते हैं। (नहीं)

(xiv) स्वलिंगी दर्शन भ्रष्ट साधु मरकर उत्कृष्ट आठवें ग्रैवेयक में उत्पन्न होते हैं। (नहीं)

(xv) कन्दमूल भक्षण करने वाले तापस मरकर उत्कृष्ट ज्योतिषी में उत्पन्न होते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(क) 25 सागरोपम	औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर
(ii)	वनस्पतिकाय	(ख) औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर	1000 योजन झाझेरी
(iii)	तीसरा ग्रैवेयक	(ग) 1000 योजन झाझेरी	25 सागरोपम
(iv)	देशविरति श्रावक गुणस्थान	(घ) 4 उपयोग	22 क्रियाएँ
(v)	चारित्र मोहनीय का उदय	(च) 22 क्रियाएँ	7 परीषह
(vi)	सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान	(छ) 4 द्रव्येन्द्रियाँ	4 उपयोग
(vii)	सर्वार्थसिद्ध एक-एक देव	(ज) 7 परीषह	भविष्य में आठ इन्द्रियाँ
(viii)	त्रीन्द्रिय	(झ) भविष्य में आठ इन्द्रियाँ	4 द्रव्येन्द्रियाँ
(ix)	वीर्य आत्मा	(य) कषाय,चारित्र, योग, वीर्य आत्मा की भजना	कषाय, योग,ज्ञान, चारित्र आत्मा की भजना
(x)	ज्ञान आत्मा	(र) कषाय, योग,ज्ञान, चारित्र आत्मा की भजना	कषाय,चारित्र, योग, वीर्य आत्मा की भजना

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मेरे उदय से जीव को विषय भोगों की इच्छा उत्पन्न होती है। वेद

(ii) मैं ऐसा मनुष्य हूँ, जिसमें 4 उपयोग पाते हैं। असन्नी मनुष्य

(iii) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 72 हजार वर्ष है। असन्नी खेचर

(iv) मुझमें दर्शन मोहनीय के उपशम की नियमा है। उपशम समकित

(v) मेरी यथाख्यात चारित्र और वीतराग दशा होती है। क्षीणमोहनीय गुणस्थानवर्ती जीव

(vi) मुझमें 14 क्रियाएँ प्राप्त होती हैं। सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान

(vii) मेरे उदय से एक परीषह होता है। दर्शन मोहनीय/अन्तराय कर्म

(viii) हम पाँच अनुत्तर विमान में जा सकते हैं। अप्रमत्त और आराधक साधु-साध्वी

(ix) हमारे द्रव्येन्द्रियाँ नहीं होती है। तैजस-कार्मण युक्त शरीर या अशरीरी

(x) हम ऐसे जीव हैं, जो संख्या में अनन्त होते हुए भी हमारी द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान में असंख्यात ही होती हैं। — वनस्पतिकाय/निगोद के जीव

(xi) मुझमें जीव एक बार ही जा सकते हैं। — सर्वार्थसिद्ध विमान

(xii) मैं चारित्र के परिणाम से शून्य हूँ। — असंयत

(xiii) मैं मन्त्र-तन्त्र आदि करने वाला श्रमण हूँ। — आभियोगिक

(xiv) मैं उत्कृष्ट पहले देवलोक में उत्पन्न होता हूँ। — कान्दर्पिक साधु

(xv) मैं ऐसा श्रावक हूँ जो उत्कृष्ट ज्योतिषी में उत्पन्न होता हूँ। — विराधक श्रावक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) मरण किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ? नाम लिखिए।

उ. जीव एक भव को छोड़कर दूसरे भव को प्राप्त करे, उसे मरण कहते हैं। इसके दो भेद हैं- 1. समोहया मरण, 2. असमोहया मरण।

(ii) तीस अकर्मभूमि की दण्डक की अपेक्षा गति-आगति लिखिए।

उ. गति-एक-देवगति में। दण्डक की अपेक्षा-तीस अकर्म भूमि की आगति दो दण्डक से- मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय से। गति-दण्डक 13 में- 10 भवनपति, 1 वाणव्यन्तर, 1 ज्योतिषी और 1 वैमानिक में।

(iii) असन्नी मनुष्य में कितने प्राण होते हैं ? नाम लिखिए।

उ. प्राण पावे- सात से कुछ अधिक (पाँच इन्द्रिय के पाँच, काय बल, श्वासोच्छ्वास (अपूर्ण) और आयुष्य बल प्राण।

(iv) यथाप्रवृत्तकरण के अन्य दो नाम लिखिए।

उ. 1. पूर्वप्रवृत्त करण, 2. अधः प्रवृत्तकरण।

(v) मिथ्यादृष्टि भव्य जीव शुक्लपक्षी कब कहलाता है ?

उ. जब अर्धपुद्गल परावर्तन काल संसार परिभ्रमण शेष रहता है। तब से वह मिथ्यादृष्टि भव्य जीव शुक्ल पक्षी कहलाता है।

(vi) 'अगाढ़ दोष' की परिभाषा लिखिए।

उ. यह मेरा शिष्य है, यह उनका, इत्यादि भ्रम उत्पन्न करने वाले दोष को 'अगाढ़ दोष' कहते हैं। अगाढ़ अर्थात् कुछ शिथिल।

(vii) अनाहारक गुणस्थान कितने हैं ? नाम लिखिए।

उ. पाँच- मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति सम्यग्दृष्टि, सयोगी केवली और अयोगी केवली गुणस्थान।

(viii) सर्वार्थ सिद्ध के एक-एक देवता की स्वस्थान सम्बन्धी तीनों कालों की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. अतीत काल में नहीं कीं, वर्तमान काल में आठ हैं और भविष्यकाल में नहीं करेंगे।

(ix) कितने प्रकार के जीव आराधक कहलाते हैं ? कोई एक प्रकार लिखिए।

उ. तीन प्रकार के जीव आराधक कहलाते हैं- A. आयु कर्म के बन्ध नहीं करने वाले मनुष्य जो उसी भव में मोक्ष जायेंगे। B. अप्रमत्त अवस्था (7वें से 11वें गुणस्थान तक) में काल करने वाले साधु-साध्वी। C. चौथे से सातवें गुणस्थान में रहते हुए अगले भव का आयुष्य बन्ध करने वाले जीव।

नोटः- इन तीनों में से कोई एक प्रकार मान्य है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) 'इन्द्रिय' तथा 'समुद्घात' को परिभाषित कीजिए।

उ. इन्द्रिय- शरीर के जिन अवयवों से शब्दादि विषयों का ज्ञान होता है, उन्हें इन्द्रिय कहते हैं, अथवा जीव द्वारा शब्दादि विषयों को जिन साधनों से जाना जाता है, वे इन्द्रियाँ कहलाती हैं।

समुद्घात- सम + उद् + घात, इन तीनों से मिलकर समुद्घात शब्द बनता है। एकीभाव पूर्वक प्रबलता से कर्मों का घात करना, समुद्घात कहलाता है।

(ii) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

उ. जलचर की 1000 योजन, स्थलचर की 6 गाउ, खेचर की प्रत्येक धनुष, उरपरिसर्प की 1000 योजन और भुजपरिसर्प की प्रत्येक गाउ की।

(iii) विकलेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. बेइन्द्रिय की 12 वर्ष, तेइन्द्रिय की 49 अहोरात्रि, चौरेन्द्रिय की छह माह की।

(iv) देशना लब्धि का स्वरूप लिखिए।

उ. देशना लब्धि- तीर्थंकर, गणधर, आचार्य, उपाध्याय, साधु-साध्वी आदि गुरूजनों से नवतत्त्व व षट्द्रव्यों के वास्तविक स्वरूप का बोध प्राप्त करना।

(v) सयोगी केवली गुणस्थान में पाये जाने वाले 10 बोल लिखिए।

उ. 1. क्षायिक समकित, 2. शुक्ल ध्यान, 3. यथाख्यात चारित्र, 4. केवलज्ञान, 5. केवल दर्शन, 6. अनन्त दान लब्धि, 7. अनन्त लाभ लब्धि, 8. अनन्त भोग लब्धि, 9. अनन्त उपयोग लब्धि, 10. अनन्त वीर्य लब्धि।

(vi) तेरहवें गुणस्थान में प्राप्त होने वाले योग लिखिए।

उ. पाँच या सात योग होते हैं- पाँच होवें तो 1. सत्य मनोयोग, 2. व्यवहार मनोयोग, 3. सत्य वचन योग, 4. व्यवहार वचन योग तथा 5. औदारिक- ये पाँच होते हैं। यदि सात हो तो पाँच पूर्वोक्त और औदारिक मिश्र तथा कार्मण।

(vii) उपशम समकित वाले जीव के प्रथमोपशम-द्वितीयोपशम के भंग लिखिए।

उ. प्रथमोपशम समकित-

1. (अ) चार का क्षयोपशम, 3 का उपशम-(त्रिपुंज होने पर)- (गुणस्थान 4 से 7 तक,स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त)।

(ब) चार का क्षयोपशम 1 (मिथ्यात्व) का उपशम- (त्रिपुंज नहीं होने पर) (नियमा नीचे गिरेगा) गुणस्थान- चौथा, स्थिति- जघन्य, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त।

द्वितीयोपशम-

2. सातों प्रकृतियों का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति-जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त)।

3. चार की विसंयोजना, तीन का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति- जघन्य- उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त)।

(viii) वनस्पतिकाय के जीवों में द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान की अपेक्षा असंख्यात ही क्यों मानी गई हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उ. वनस्पति में सूक्ष्म व साधारण निगोद के जीव यद्यपि अनन्त होते हैं। किन्तु उन जीवों के औदारिक शरीर कुल असंख्यात ही होते हैं। इस कारण से वनस्पतिकाय के जीवों में द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान की अपेक्षा असंख्यात ही मानी जाती हैं।

(ix) पृथ्वी, पानी और वनस्पतिकाय के एक-एक जीव की तीनों कालों में की जाने वाली द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. अतीत काल में द्रव्येन्द्रियाँ अनन्त कीं, वर्तमान में एक द्रव्येन्द्रिय है और भविष्य में आठ अथवा नौ यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।